International Journal of Information Movement Vol.I Issue VI (October 2016)
Website: ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 100-102

हरियाणा में संस्कृत की स्थिति

राकेश कुमार
कुरुक्षेत्र

हरियाणा प्रदेश भारतीय राजनैतिक मानचित्र पर 1 नवम्बर 1966 को प्रदर्शित हुआ। इससे पहले हरियाणा राज्य की गणना पंजाब प्रदेश में की जाती थी। इस पावन धरा पर बहुत परिवर्तन हुए हैं। प्रत्येक परिवर्तन ने विकास की ओर ही कदम रखा है। उसी प्रकार भारतीय संस्कृति के विकास में भी परिवर्तन होने पर एक उत्तम कदम हरि की भूमि हरियाणा प्रदेश का रहा है। अगर इतिहास वेता इस विषय पर तथ्य जुटा पाएं, तो हरियाणा देवों की भूमि से ही सुशोभित माना जाता है, गीता का उपदेश यहां पर ही दिया गया था। यह हरियाणा प्रदेश के लिए अत्यन्त गौरव की बात है कि हरियाणा प्रदेश ने विश्व में धर्म शास्त्र महाभारत और गद्यात्मक ग्रन्थों में उत्तम ग्रन्थ कादम्बरी तथा हर्षचरित दिये हैं। चिन्तकों ने हरियाणा की भूमि को मात्र संघर्ष की भूमि ही माना है, परन्तु यहां पर आधुनिक समय में भी महान विद्वानों ने जन्म लिया है, फिर भी हरियाणा की भूमि पांडित्य परम्परा और काव्यसाधना में खलल पूर्ण मानी जाती रही है। अगर हरियाणा का अस्तित्व देखें, तो इस शब्द का प्रयोग हरितारण्य, आग्रायण, आभीरायण, अहीरायण इस बाद हरियाणा नाम पड़ा। देशोऽस्ति हरियाणाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसिन्निभः दिल्लिकाख्यां पुरी तत्र तोमरैरति निर्मिता।।

हरियाणा 12वीं शताब्दी में सुप्रसिद्ध और विख्यात हो चुका था ऐसे मात्र प्राप्त तथ्यों पर आधारित है। हरियाणा में प्रारम्भ से कान्तिकारियों की भूमि रही है। इसके साथ-साथ महर्षि मुनि का सम्बध भी हरियाणा के साथ माना जाता है। उनका जन्म सरस्वती तट पर हुआ था। जो हरियाणा के कुरुक्षेत्र में ही बहती है। महानों विद्वानों का मानना है महर्षि पराशर, धृतराष्ट्र पाण्डु ओर विधुर भी यहीं पर पैदा हुए जिसे यमुना द्वीप अर्थात् यमुनानदी माना जाता है।

अगर आज के युग की बात करें तो, संस्कृत विद्वानों का जहाँ तांता लगा रहता था। वहीं पर आज संस्कृत का प्रचार-प्रसार शिथिल प्रभाव में चल रहा है, परन्तु उत्तरकालीन गुप्त युग में हर्षवर्धन स्थाण्वीश्वर के राजा प्रभाकरवर्धन के छोटे पुत्र युवराज राजवर्धन के देहांत हो पश्चात् हर्षवर्धन राजा बने। वे संस्कृत प्रेमी थे जिनकी राजा सभा में बाणभट्ट, मयूर, मातंग, दिवाकर, धावक जैसे प्रसिद्ध कवि उनकी सभाा में रत्न थे।

ब्रिटिश शासन अपने तौर तरीके से भारत का नव निर्माण करना चाहता था, परन्तु उस समय कुछ दुरदृष्टा आचार्यों ने सभ्य संस्कृत समाज उन्नति के लिए कदम उठाते हुए साहित्य लिखा भारत में संस्कृत को बचाने वाली संस्थाएँ खोली उनको आगे बढ़ाया। हरियाणा में प्रथा संस्था 1901 में भिवानी प्रान्त में खुली इसके पश्चात् अम्बाला, सिरसा, पटौदी रोहतक कैरू, जुलाना, जगाधरी, कुरुक्षेत्र, अस्थल बोहर बधौला, पाण्डु पिंडारा आदि पाठशालाएँ स्थापित हो गई संस्कृत भाषा को राक्षण और आगे बढाने में लगी हुई हैं।

आज हरियाणा में 26 संस्कृत विधालय और महाविद्यालय है, जो धार्मिक संस्थाओं द्वारा चलाई जा रही हैं 40 गुरुकुल भी हैं, जो संस्कृत रक्षण में सहायक हैं। अन्य कुछ विद्यालय-महाविद्यालय बन्द भी हो चुके हैं। सभी हरियाणा की संस्थाओं का सर्ववेक्षण प्रान्तानुसार इस प्रकार है।

जनपद	संस्थाओं की संख्या	जनपद	संस्थाओं की संख्या
अम्बाला	2	जीन्द	10
करनाल	1	रोहतक	5
पानीपत	5	झज्जर	1
पंचकूला	1	बहादुर	1
फरीदाबाद	2	बादली	1
गुरुग्राम	3	मटिण्डू	1
पलवल	1	हिसार	5
कुरुक्षेत्र	5	सिरसा	4
शाहबाद	1	सोनीपत	4

रेवाड़ी	3	गोहाना	3
महेन्द्रगढ़	1	हाँसी	1
यमुनानगर	1	भिवानी	5
जगाधरी	1		

इन संस्थाओं में से आज 65 प्रतिशत संस्कृत संस्थाएँ बन्द हैं। अगर बात करें संस्कृत भारती के कार्यक्रमों से कुछ तो व्यवहारिक संस्कृत सम्भाषण अर्थात् शिक्षणात्मक और संगठनात्मक विषयों पर बल दे रही है। उत्तर भारत में संस्कृत भारती का मुख्य कार्यालय कृष्णाधाम मन्दिर, कुरुक्षेत्र में है जो वर्ष 2000 में स्थापित हुआ था। इस संस्था ने अम्बाला, करनाल, पानीपत, गुडगांव कुरुक्षेत्र, यमुनानगर भिवानी कैथल भी लगभग हरियाणा के 15 जनपदों में 20 से अधिक आवासीय वर्गों का भी आयोजन किया गया है। इस संख्या के अलग हरियाणा अकादमी, पंचकूला भी संस्कृत को बढ़ावा देने में कुछ कारगर सिद्ध हुई है जैसे-संस्कृत विद्वानों को परितोषित करना व योग्य संस्कृत छात्रों की आर्थिक सहायता करना हरियाणा के भिन्न-भिन्न जनपदों में संस्कृत सम्बंधि प्रतियोगिताओं का समायोजन करना आदि।

निष्कर्ष:

हरियाणा प्रान्त 'हरि' का प्रान्त पैमाना गया है। हरियाणा में संस्कत के अनेक विद्वान हुए हैं जिनकी बदौलत संस्कृत का विकास मार्ग निरन्तर प्रशस्त होता रहा है गत-दर्श वर्ष पहले जब संस्कृत के स्थान पर पंजाबी को द्वितीया राज्यभाषा का दर्जा दिया गया तब तो संस्कृत की स्थिति डगमगाई, परन्तु पिछले कुछ दिनों से संस्कृतभारती, साहित्य संस्कृत अकादमी व अन्य संस्थाओं की बदौलत अब कार्य प्रगति की ओर चलायमान है। अगर राजकीय व्यवस्था का सहयोग पूरी तरह से मिल जाए तो हरियाणा में संस्कृत अध्ययन की स्थिति में परिवर्तन लाया जा सकता है।

संदर्भ सूची:

1. हरियाणा की संस्कृत साधना - प्रो. वीरेन्द्र कुमार अलंकार
2. हरियाणा गौरवम् - डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा
3. हरि प्रभा मासिक पत्रिका, हरियाणा संस्कृत अकादमी, पंचकूला।